'प्लेटो का आदर्श राज्य'

प्लेटो पाश्चात्य जगत का प्रथम राजनीतिक विचारक है, जिसने क्रमबद्ध रूप से राज्य, शासन, एवं कानून आदि पर अपने विचार दिये हैं। प्लेटो मूलतः एक आदर्शवादी विचारक रहा है। उसने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ रिपब्लिक में राज्य के आदर्श रूप की चर्चा की है तथा बताया है कि उसके आदर्श राज्य में मनुष्य के तत्कालीन सभी राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं का हल मौजूद है।

ऐसा नहीं है कि प्लेटो के चिन्तन के केन्द्र में राज्य का आदर्श रूप अनायास आ गया बल्कि इसके लिये यूनान की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ काफी हद तक जिम्मेवार रही है। प्लेटो के समय उसका राज्य एथेंस पेलोपोनेसिया के युद्ध में स्पार्टा से हार गया। इस हार के कारण वहाँ प्रजातंत्र का पराभव हो गया तथा तीस व्यक्तियों (Thirty Tyrants) का आतंकी शासन स्थापित हुआ। कुछ ही समय बाद वहाँ पुनः प्रजातंत्र की स्थापना हुई। प्रजातंत्र की स्थापना में वह सहभागी भी था और आगे जाकर जब प्रजातंत्र अपने लक्ष्य से भटक गया तो वह अपने को उससे किनारा कर लिया तथा राजनीति से संन्यास ले लिया। वस्तुतः इसी प्रजातांत्रिक व्यवस्था ने 399 ई० पू० में सुकरात को प्राणदंड दी थी। कमोवेश ऐसी स्थिति यूनान के सभी राज्यों में मौजूद थी। यूनान के लगभग सभी नगर राज्यों में व्यक्तिवाद, अक्षमता, आत्मपरता एवं राजनीतिक स्वार्थपरता का वातावरण था। ऐसे में उसने एक विवेकशील शासक (दार्शनिक शासक) की कमी महसूस की और अपनी पुस्तक रिपब्लिक में आदर्श राज्य का सृजन किया। यह बात अलग है कि प्लेटो ने राज्य के आदर्श रूप का सृजन करते समय एक चित्रकार की भाँति व्यवहारिकता की उपेक्षा की है।

प्लेटो का मानना है कि उसके आदर्श राज्य का विकास तीन चरणों में होगा। प्लेटो के आदर्श राज्य के विकास के प्रथम चरण में उत्पादक वर्ग का जन्म होगा है। उसके अनुसार

P- L

मानव की आर्थिक आवश्यकतायें राज्य की उत्पत्ति का प्रमुख आधार है क्योंकि इनकी पूर्ति के लिये ही व्यक्ति किसी न किसी प्रकार का सम्मिलित सहयोग करने को बाध्य होता है। इकाई रूप में कोई भी व्यक्ति अपने समस्त आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता जबकि पारस्परिक सहयोग एवं विनिमय से सभी अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। किसी भी व्यक्ति या समाज के आर्थिक हितों की समुचित रूप से रक्षा तभी हो सकती है जब व्यक्ति अपने द्वारा तैयार वस्तुयें समाज को प्रदान करे तथा अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुयें समाज से प्राप्त करे। आर्थिक जीवन में वस्तुओं का इस प्रकार आदान-प्रदान श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण को जन्म देता है। इस तरह प्रथम चरण में उत्पादक वर्ग का जन्म होता है जिसका प्रमुख गुण सम्पत्ति प्रेम तथा क्षुधा है।

राज्य की उत्पत्ति का दूसरा चरण तब प्रारम्भ होता है जब सैनिक वर्ग का उदय होता है जो राज्य के साहस तथा उत्साह का प्रतिनिधि है। राज्य के अंग के रूप में इस वर्ग का प्रमुख गुण उत्साह है। प्लेटो के अनुसार मनुष्य सिर्फ आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने मात्र से सन्तुष्ट नहीं हो जाता बल्कि वह अपनी सांस्कृतिक इच्छाओं को भी तृप्त करना चाहता है। उसे संगीत, साहित्य, काव्य आदि विभिन्न वस्तुओं की तलाश होती है। इन विभिन्न वस्तुओं की प्राप्ति प्राप्ति हेतु अधिसंख्यक लोगों का होना आवश्यक है। अधिसंख्यक लोगों के निवास तथा भरण पोषण के लिये विशाल भू-प्रदेश की आवश्यकता होती है। विशाल भू-प्रदेश को अधिकृत करने के लिए युद्ध होता है। युद्ध के लिए सैनिक वर्ग का उदय होता है। सैनिक वर्ग मानव आत्मा के उत्साह एवं साहस तत्व का प्रतीक है।

आदर्श राज्य के निर्माण का तीसरा चरण तब प्रारम्भ होता है जब सैनिक वर्ग से ही विवेक तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वोच्च वर्ग का निर्माण होता है। उसके अनुसार सैनिक वर्ग के लोगों में सामान्यतया उत्साह तथा विवेक पाया जाता है किन्तु इसमें कतिपय लोग भी होते हैं जिनमें उत्साह की अपेक्षा विवेक का अत्यधिक बाहुल्य होता है। ऐसे लोगों को प्लेटो राज्य का दार्शनिक शासक मानता है। विवेक के अन्तर्गत प्लेटो ने दो गुण माने हैं। प्रथम विवेक से व्यक्ति को ज्ञान होता है तथा द्वितीय विवेक व्यक्ति को प्रेम करना सिखाता है। अतः प्लेटो के अनुसार शासक को विवेकशील होना चाहिए एवं उसमें पर्याप्त मात्रा में स्नेहशीलता होनी चाहिए।

इस प्रकार तीन चरणों में आदर्श राज्य का निर्माण उन तीन वर्गों के क्रमशः विकास के साथ सम्पन्न होता है जो राज्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं - उत्पादन, रक्षा तथा शासन की पूर्ति अपने तीन गुणों क्षुधा (Appetite) साहस (Spirit) तथा विवेक (Reason) के आधार पर करते हैं।

जब हम प्लेटो के आदर्श राज्य के विकास चरण पर दृष्टि डालते हैं तो हमारे सामने आदर्श राज्य की कुछ विशेषताएँ सामने आती हैं जो निम्न हैं—

(1) दार्शनिक शासक का शासन - प्लेटो के अनुसार राज्य तभी आदर्श रूप ग्रहण कर सकता जब राज्य का शासन निस्वार्थ, कर्तव्य-परायण दार्शनिक शासक द्वारा किया जाय। वह व्यक्ति के विवेक को व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व समझता है और उसके अनुसार विवेक सम्पन्न व्यक्ति द्वारा ही शासन कार्य किया जाना चाहिए। अपने पुस्तक रिपब्लिक में उसने स्पष्ट किया है कि नगर राज्य में तब तक कष्टों का अंत नहीं होगा जब तक कि दार्शनिक राजा न होंगे और विश्व के नरेशों एवं युवराजों में दर्शन की भावना न होगी।

प्लेटो के अनुसार दार्शनिक शासक को विवेक का प्रेमी, सत्यानुगामी, न्यायप्रिय, निःस्वार्थी, आत्मसंयमी, शांत स्वभाव वाला एवं तीक्ष्ण स्मरण शक्ति वाला, भले गुणों से लैस होना चाहिए। प्लेटो आगे दार्शनिक राजा के लिए कुछ कर्तव्य भी निश्चित किया है जो निम्न हैं—

(क) राज्य में धन और निर्धनता का प्रवेश रोकना - प्लेटो के अनुसार ~~दार्शनिकों~~ दार्शनिक शासकों को यह देखना पड़ेगा कि राज्य में न धन अथवा निर्धनता का प्रवेश न हो क्योंकि धन से विलासिता, आलस्य और वैमनस्य पैदा होता है तथा निर्धनता से कमीनापन एवं कुकृत्य।

(ख) राज्य की सीमा में वृद्धि या कमी को रोकना - राज्य की एकता को कायम रखने के लिये उसे राज्य की सीमा को न तो अधिक बढ़ाना ही चाहिए और न ही अधिक कम करना चाहिए। ~~अ~~ राज्य का आकार इतना होना चाहिए कि वह आत्मनिर्भर हो।

(ग) न्याय प्रशासन को कायम रखना।

(घ) शिक्षा पद्धति को बनाये रखना।

(ङ) कानून का निर्माण करना आदि

यह बात सही है कि आदर्श राज्य का कानून दार्शनिक राजाओं द्वारा निर्मित योग्य तथा दार्शनिक राजा पर कानून का कोई बंधन नहीं होगा। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि दार्शनिक शासक निरंकुश होगा बल्कि वह मर्यादित होगा क्योंकि उसे कतिपय मर्यादाओं में कार्य करना होगा।

(2) न्याय की अवधारणा - प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य का आधार शिला न्याय का सिद्धान्त है। चूँकि आदर्श राज्य में तीन वर्ग होते हैं और कार्य विभाजन के विशेषीकरण की धारणा के आधार पर इन तीनों वर्गों को अपना-अपना कार्य दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप किये बिना करना होता है। इसलिए न्याय राज्य का वह गुण है जो राज्य के वर्गीकरण को तथा कार्य विभाजन को सुचारु रूप से कायम रखता है। इस गुण की उपस्थिति के कारण ही राज्य के विभिन्न वर्ग अपने-अपने कार्य क्षेत्रों तक अपनी कार्य व्यवस्थाओं को सीमित रखते हुये अपनी प्राकृतिक क्षमता एवं प्रशिक्षण के आधार पर निश्चित कार्य को पूर्ण तन्मयता एवं लगन से सम्पन्न करते हैं एवं प्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं। प्लेटो की दृष्टि में वह राज्य न्याय पर आधारित है जिसमें नागरिक अपने-अपने निर्धारित क्षेत्रों में अपने निम्न के कार्य सम्पन्न करते हैं।

(3) शिक्षा योजना - प्लेटो शिक्षा को आदर्श राज्य का आधार स्तंभ माना है। उसने रिपब्लिक में शिक्षा को इतना अधिक महत्व दिया है कि रूसो उसे राजनीतिक विषयक ग्रंथ न मानकर शिक्षा विषयक ग्रंथ माना है। प्लेटो का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा व्यक्ति को एक विशेष कार्य का प्रशिक्षण देकर उसे वही कार्य सम्पन्न करते रहने की प्रेरणा देगी। राज्य द्वारा नियोजित शिक्षा प्रणाली को अपनाकर एक बहुत बड़ी सीमा तक व्यक्ति के दृष्टिकोण को सही दिशा में बदला जा सकता है। आदर्श राज्य द्वारा प्रदत्त शिक्षा योजना की निम्न विशेषताओं पर प्लेटो जोर देता है -

(क) शिक्षा राज्य द्वारा दी जानी चाहिए।
(ख) स्त्री एवं पुरुषों के लिए समान शिक्षा प्रणाली
(ग) शिक्षा का उद्देश्य शरीर और मस्तिष्क दोनों का विकास करना है।
(घ) शिक्षा का प्रयोजन उत्तम नागरिक बनाना है।

(3) शिक्षा द्वारा दार्शनिक राजा तैयार किये जाने चाहिए। प्लेटो की शिक्षा योजना का मुख्य उद्देश्य दार्शनिक शासक तैयार करना रहा है। उसके अनुसार बालक वर्ष तक की प्राथमिक शिक्षा की अवधि में व्यायाम एवं संगीत के द्वारा शरीर और मन का विकास किया जाता है। 20 से 30 वर्ष तक विभिन्न विज्ञानों के द्वारा उसके विवेक को विकसित और आत्मचक्षु को सत्य की ओर उन्मुख किया जाता है। तीस से पैंतीस वर्ष की अवस्था के बीच द्वन्दात्मकता की शिक्षा के द्वारा उसे सर्वोच्च सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। परन्तु यह शिक्षा यहीं पूर्ण नहीं होती। आगामी पंद्रह वर्ष तक अपने सद्धान्तिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप में परिणत करने के लिए उसे संसार की पाठशाला में विचरण करना पड़ता है। इस अवधि में सोने की भाँति उसे अग्नि में तपाया जाता है जिससे भावष्य में शासक बनने पर वह श्रेष्ठ और खोटा न प्रमाणित हो। इस तरह दार्शनिक शासक का निर्माण होता है।

(4) साम्यवाद - साम्यवाद प्लेटो के आदर्श राज्य का एक अन्य आधार स्तंभ है। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास कर लेने मात्र से आदर्श राज्य का निर्माण नहीं हो जायेगा क्योंकि अनेक बाह्य परिस्थितियाँ ऐसी होती है जिनका अनिष्टकारी प्रभाव मानव के हृदय पटल पर पड़ता है। अतः साम्यवाद के द्वारा वह अनिष्टकारी प्रभाव को नष्ट कर देना चाहता है। वस्तुतः व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा परिवार दो ऐसे तत्व है जो राज्य को आदर्श स्थिति तक पहुँचने में अवरोध उत्पन्न करते है। प्लेटो इन अवरोधों को साम्यवाद द्वारा दूर करता है।

प्लेटो का साम्यवाद आदर्श राज्य की दो वर्गों - शासकों एवं सैनिकों तक ही सीमित है। अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति एवं पारिवारिक जीवन की आहुति इन्हीं दो वर्गों को देनी थी क्योंकि आदर्श राज्य की सफलता इनकी कार्य कुशलता, क्षमता स्वार्थहीनता तथा राज्य के प्रति इनकी आस्था पर आधारित था। इनकी सेवाओं के बदले राज्य इनकी आर्थिक आवश्यकताओं - भोजन, वस्त्र, निवास आदि का सामूहिक रूप से प्रबंध करता है इस तरह प्लेटो का साम्यवाद आर्थिक न होकर राजनीतिक था।

(5) राज्य का हित सर्वोपरि - प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्ति गौण था। प्लेटो का मानना था कि राज्य का सर्वोच्च

स्थापित करके ही मानव का कल्याण किया जा सकता है।

(6) कानून का अभाव - प्लेटो अपने आदर्श राज्य के लिए कोई नियम, कानून निर्धारित नहीं करता, बल्कि सब कुछ दार्शनिक राजा के विवेक पर छोड़ देता है। उसका मानना था कि चूंकि राजा विवेकशील है इसलिए वह मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेगा।

उपरोक्त विशेषताओं के बावजूद प्लेटो के आदर्श राज्य में कई दोष मौजूद थे जो निम्न थे -

(क) प्लेटो का आदर्श राज्य अव्यवहारिक एवं कल्पना प्रधान है।

(ख) आदर्श राज्य व्यक्तियों को आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता। नियंत्रणकारी होने के कारण इसमें व्यक्तियों की सभी प्रवृत्तियों का विकास संभव नहीं।

(ग) उत्पादक वर्ग की नितांत उपेक्षा की गयी है। शिक्षा से इस वर्ग को वंचित रखा गया है। एक तरफ प्लेटो का मानना है कि निम्न वर्ग में उत्पन्न व्यक्तियों को अपनी योग्यता के आधार पर उच्च वर्ग में सम्मिलित होने का अधिकार होना चाहिये लेकिन प्लेटो इस कार्य को संभव बनाने हेतु उपादक वर्ग के लिये समुचित शिक्षा सुविधाओं की व्यवस्था नहीं करता।

(घ) कानून की उपेक्षा की गई है और दार्शनिकों को निरंकुश सत्ता सौंप दी गई है मर्यादा बंधन के नाम पर। जबकि अपनी पुस्तक लॉज में कानून की अनिवार्यता को स्वीकार किया है।

(ङ) कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति अनुचित है क्योंकि इससे मानवीय व्यक्तित्व का एक विशेष पक्ष ही विकसित हो पाता है और शेष व्यक्तित्व अप्रभावित रहता है।

(च) शासन के लिये आवश्यक तत्वों की उपेक्षा - कानून, सलाहकार पदाधिकारियों की व्यवस्था तथा दंड देने की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं।

लेकिन जब हम आदर्श राज्य का समग्र अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि भले ही इसमें कुछ कमियां थी लेकिन इस आधार पर इसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। वस्तुतः राजनीतिक आदर्श वह मापदंड होता है जिसमें वर्तमान जीवन की कमियों को आँका जा सके। किसी भी राजनीतिज्ञ का काम मौजूदा राज्य की जानकारी कर लेने मात्र से नहीं चल सकता। मौजूदा राज्य किस

सीमा तक श्रेष्ठ है तथा किस सीमा तक निकृष्ट है इस तथ्य का भान तभी हो सकता है जब उनको किसी आदर्श राज्य के समकक्ष खड़ा करके देखा जाये। ऐसा किये बिना किसी मौजूदा राज्य में अंशमात्र भी सुधार करने की गुंजाइश नहीं रहती। किसी आदर्श मॉडल को दृष्टिगत रख कर कदम बढ़ाने से ही राजनीतिक जीवन के निर्माण कार्य में समुचित रूप से सफलता मिलने की आशा की जा सकती है अन्यथा नहीं। इसी तथ्य को पहचान कर प्लेटो ने आदर्श राज्य का चित्रण किया है।

—०—